B. A. Third Year

First paper

Geographical Thought

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of geography

Harishchandra P. G. College Varanasi

अभिनव शास्त्रीय युग (Modern classical Period)
(हम्बोल्ट + कार्ल रिटर) (तुलनात्मक अध्ययन)

भूगोल का प्रारम्भिक विकास एवं उसको वैज्ञानिक आधार प्रदान करने का श्रेय जर्मन भूगोलवेत्ताओं; को जाता है। अन्वेषण के महान युग के बाद जिन दो जर्मन विद्वानों ने मानव विज्ञानों में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया उनमें हम्बोल्ट व कार्ल रिटर का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। दोनों ही समकालीन विद्वान थे। उन्होंने तीन दशाब्दियों से अधिक समय बर्लिन में रहकर कार्य किया। दोनों ही आधुनिक भूगोल के संस्थापक माने जाते हैं। इन दोनों ने ही भूगोल के लिए उच्च स्तर का साहित्य उपलब्ध कराया तथा भूगोल को एक वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक विषय के रूप में स्थापित कराया। इनके कारण जर्मनी को भूगोल विषय का जन्म देने वाला देश माना जाता है। इनका युग अभिनव शास्त्रीय युग (Modern classical Period) भी कहलाता है।

<- - - - - कार्लरिटर + हम्बोल्ट - - - - - ->

इस प्रकार हम्बोल्ट (1769-1859) एवं कार्लरिटर (1779-1859) दोनों ही वर्तमान भूगोल के चिरसम्मत काल (Classical Period of Modern Geography) के पर्याय माने जाते हैं। उनको आधुनिक भूगोल की नींव का पत्थर या भवन का स्तम्भ (One of the founder of Modern Geographical thought) माना जाता है। रिटर एक समर्पित क्षेत्र कार्यकर्ता (field worker) था और आनुभविक अनुसंधान (Empirical Research) में विश्वास रखता था। वह प्रकृतिप्रेमी (Teleologist) था तथा ईश्वर में उसकी प्रगाढ़ आस्था थी।

हम्बोल्ट व रिटर में समानता (I) **तुलनात्मक विधि** - दोनों ने तुलनात्मक विधि का विकास किया।

(II) **पार्थिव एकता की संकल्पना एवं तत्वों में कार्य-कारण संबंध** - दोनों ने प्रकृति की एकता एवं कार्य-कारण के संबंध पर विशेष बल दिया।

(III) **भौगोलिक अध्ययन में मानव को महत्व** => दोनों का ही मानना था कि किसी भी क्षेत्र या प्रदेश का अध्ययन मानव के बिना अधूरा है। उन्होंने पृथ्वी को मानव का गृह माना है।

(IV) **आनुभविक विधि** - दोनों ही भौगोलिक अध्ययन में "आनुभविक विधि" को महत्वपूर्ण मानते थे। उनके अनुसार यदि किसी क्षेत्र का अध्ययन करना है तो उस क्षेत्र में जाकर प्रत्यक्ष अवलोकन व अनुभव के आधार पर ही ऐसा करना सम्भव हो पाता है।

(V) **भूगोल की परिभाषा** - दोनों के अनुसार, भूगोल, पृथ्वी व मानव के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन है।

(VI) **भौतिक भूगोल को समस्त भूगोल का आधार माना** - दोनों ने भौतिक भूगोल को समस्त भूगोल का आधार माना है और

बताया कि भौतिक भूगोल का विशिष्ट उद्देश्य प्रकृति की एकता को स्पष्ट करना है।

(VII) भूगोल गतिशील विषय - उनके अनुसार पृथ्वी पर कोई भी दृश्य स्थिर नहीं है, उसमें समय के साथ परिवर्तन होता रहता है।

(VIII) प्रमुख ग्रन्थों में समानता - हम्बोल्ट का कास्मास व रिटर का अर्डकुंडे दोनों ही पृथ्वी के भौगोलिक वर्णन का सम्पूर्ण साहित्य प्रस्तुत करते हैं।

(IX) पृथ्वी एक जैविक इकाई के रूप में (Organic Whole) दोनों ने पृथ्वी व प्राकृतिक वातावरण को एक जैविक इकाई के रूप में माना है।

(X) मानचित्रों का महत्व - दोनों ने भौगोलिक अध्ययन में मानचित्रों एवं चित्रों की आवश्यकता पर जोर दिया है। रिटर ने यूरोप की मानचित्रावली तैयार की जबकि हम्बोल्ट का कहना था कि भौगोलिक व्याख्या मानचित्रों के बिना अधूरी है।

(XI) व्यवस्थित भूगोल (Systematic Geography) दोनों विद्वान किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए विभिन्न भौगोलिक तथ्यों का व्यवस्थित अध्ययन करने के समर्थक थे।

(XII) विज्ञान का आधार - दोनों की मान्यता थी कि विज्ञान का आधार निरीक्षण द्वारा प्राप्त तथ्य होने चाहिए न कि तर्कसंगत विचार।

हम्बोल्ट व रिटर में अन्तर (असमानताएं) ⟹

1. हम्बोल्ट की शिक्षा प्राकृतिक विज्ञान में हुई थी जबकि रिटर की शिक्षा दर्शनशास्त्र एवं इतिहास में हुई थी।
2. हम्बोल्ट एक अन्वेषक था (Explorer) जबकि रिटर एक "आर्मचेयर भूगोलवेत्ता"
3. हम्बोल्ट का उपागम कारणात्मक (Casual) था जबकि रिटर ईश्वरवादी चिंतन के उपागम का समर्थक था। हम्बोल्ट की विचारधारा पूर्णतः वैज्ञानिक थी एवं वह ईश्वरी उद्देश्य में कोई विश्वास नहीं रखता था। रिटर के विचार ईश्वर उद्देश्यवादी थे।
4. हम्बोल्ट ने क्रमबद्ध भूगोल की रचना की जबकि रिटर शारीरिक भूगोल का जनक था।
5. हम्बोल्ट ने अपने भौगोलिक अध्ययन में मानव को अन्य तत्वों के समान माना जबकि रिटर ने अपने भौगोलिक अध्ययन में मानव को केन्द्रीय स्थान दिया (Anthropocentric view)
6. हम्बोल्ट प्राकृतिक वैज्ञानिक था जबकि रिटर एक दार्शनिक था।
7. हम्बोल्ट के अध्ययन यूरोप महाद्वीप के बाहर की यात्राओं के अनुभव के आधार पर आधारित थे जबकि रिटर ने यूरोप के कुछ स्थानों का भ्रमण किया था।

⟹ वास्तव में हम्बोल्ट व रिटर एक दूसरे के पूरक थे उनके विचारों के समावेश के बिना कोई भी भौगोलिक अध्ययन अधूरा है।